सेठ गोविन्ददास

व्यक्तित्व एवं साहित्य

सेठ गोविन्ददास : व्यक्तित्व एवं साहित्य

सेठ गोविन्ददास : व्यक्तित्व एवं साहित्य

संपादक
प्रो० विजय कुमार शुक्ल
गोविन्द प्रसाद श्रीवास्तव

साहित्य भवन (प्राइवेट) लिमिटेड
इलाहाबाद

मूल्य	१२ रु०
प्रथम संस्करण	१९६५
प्रकाशक	साहित्य भवन प्रा० लि० इलाहाबाद—३
मुद्रक	पियरलेस प्रिंटर्स, इलाहाबाद

प्रकाशकीय

सेठ गोविन्ददास जी की राष्ट्रीय व हिन्दी सेवाएँ आज किसी से छिपी नहीं हैं। भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में वे एक प्रमुख सेनानी रहे और स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद राष्ट्रभाषा की सेवा में एकाग्रचित्त हो कर लग गए हैं। देश-प्रेम व राष्ट्रभाषा के प्रेम के लिए उन्होंने अपना अतुलनीय वैभव का त्याग किया और आज जब उन्हें भारतीय शासन में उच्चतम पद प्राप्त हो सकता था तब हिन्दी की सेवा के लिए उन्होंने यह राजकीय वैभव भी त्याग दिया।

सेठ गोविन्ददास का व्यक्तित्व और उनकी सेवाएँ किसी भी देश-प्रेमी व राष्ट्रभाषा प्रेमी के लिए एक आदर्श है। अतः उनके व्यक्तित्व और साहित्य पर विभिन्न दृष्टियों से विस्तृत विवेचना प्रस्तुत करने हेतु ही इस ग्रंथ का प्रकाशन किया गया है।

आशा है पाठक गण इस ग्रंथ से सेठ जी को बहुत निकट से जानने समझने में सफल होंगे।

निवेदन

प्रस्तुत संग्रह गोविन्ददास जी के साहित्यिक व्यक्तित्व और उनके साहित्य पर गत लगभग तीस वर्षों में विभिन्न विद्वानों और पत्र-पत्रिकादि ने जो कुछ लिखा है, उसका संकलन है। हमने इस संकलन को निम्नलिखित छः विभागों में बांटा है :—

(१) व्यक्तित्व

(२) नाट्य-साहित्य

(३) उपन्यास

(४) काव्य

(५) यात्रा साहित्य

(६) आत्मकथा

गोविन्ददास जी ने अपना पहला 'चम्पावती' नामक उपन्यास केवल बारह वर्ष की अवस्था में लिखा था। उस समय बाबू देवकी नंदन जी खत्री के 'चन्द्र-कान्ता' उपन्यास की बड़ी धूम थी। अतः यह उपन्यास भी उसी परिपाटी का ऐय्यारी और तिलिस्मी उपन्यास था। उसके बाद सेठ जी ने दो और इसी प्रकार के उपन्यास लिखे। इनके नाम थे 'कृष्णलता' और 'सोमलता'। सोमलता उपन्यास के कई भाग थे। तदुपरान्त जब गोविन्ददास जी मैट्रिक के पाठ्यक्रम में शिक्षा पा रहे थे उस समय उन्होंने शेक्सपियर के चार नाटकों पर चार उपन्यास लिखे। 'रोम्योजूलियट' पर 'सुरेन्द्र सुन्दरी', 'एज़ यू लाइक इट' पर 'कृष्णकामिनी' 'पेरेक्लीज़ प्रिंस आफ टायर' पर 'होनहार' और 'विंटर्स टेल' पर 'व्यर्थ संदेह'। इन उपन्यासों में से 'सोमलता' के तीन भाग तथा शेक्सपीयर के नाटकों पर लिखे हुए चारों उपन्यास प्रकाशित भी हुए। हमें बड़ा खेद है कि यह समस्त साहित्य अनुपलब्ध है। उस काल में हिन्दी में आलोचना का भी सर्वथा अभाव ही था। इसलिए इस साहित्य पर हमें कोई आलोचना भी नहीं मिली।

गोविन्ददास जी का पहला 'विश्व-प्रेम' एक सामाजिक नाटक सन् १९१६ में लिखा गया और जबलपुर के 'शारदा भवन' पुस्तकालय के वार्षिकोत्सव में सफलतापूर्वक खेला भी गया। इस नाटक में हिन्दी के व्याकरणाचार्य श्री कामता-प्रसाद जी गुरु आदि जबलपुर के अनेक लब्ध-प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने अभिनय किया था। परन्तु उस समय यह नाटक प्रकाशित नहीं हुआ, अतः इसकी कोई आलोचना भी उपलब्ध नहीं है।

गोविन्ददास जी का दूसरा नाटक 'विश्वासघात' प्लासी के युद्ध की कथा पर सन् १९२३ में लिखा गया, परन्तु यह भी प्रकाशित नहीं हुआ। 'विश्व-प्रेम' नाटक के सदृश यह कहीं खेला गया या नहीं, यह हमें ज्ञात नहीं हो सका।

यथार्थ में सेठ जी का साहित्य सृजन उनकी पहली जेल यात्रा के समय सन् १९३० से आरम्भ होता है। उनके तीन नाटक एक जिल्द में, और पृथक्-पृथक् रूप से भी, सन् १९३५ में प्रकाशित हुए। तब से अब तक लगभग तीस वर्षों में उनका सभी प्रकार का साहित्य प्रकाशित होता रहा है; पुस्तक रूप से और पत्र-पत्रकादि में। इस साहित्य की पक्ष-विपक्ष में आलोचनाएँ भी खूब हुई हैं। हिन्दी का शायद ही कोई ऐसा लब्ध प्रतिष्ठित आलोचक हो जिसने उनके किसी न किसी साहित्य पर कुछ न कुछ संक्षेप से या विस्तार से न लिखा हो। हिन्दी के विविध प्रकार के साहित्य पर जो आलोचनात्मक-ग्रन्थ निकले हैं, उनमें भी सेठ जी के साहित्य के सम्बन्ध में कुछ-न-कुछ कहा गया है। वे प्रमुख रूप से नाटककार हैं। नाटक पर जो आलोचनात्मक ग्रन्थ निकले हैं उनमें गोविन्ददास जी के साहित्य को पर्याप्त स्थान प्राप्त हुआ है। कई ग्रन्थों में तो उनके साहित्य पर विस्तार से पृथक् अध्याय ही लिखे गये हैं।

सेठ जी के कुछ साहित्य का अन्य भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी में अनुवाद भी हुआ है। अन्य भारतीय भाषाओं के विद्वानों अथवा पत्र-पत्रिकादि ने सेठ जी के साहित्य पर कुछ लिखा है या नहीं, यह हमें ज्ञात नहीं हो सका, परन्तु कुछ अंग्रेज विद्वानों ने और अंग्रेजी के पत्रों ने उनके साहित्य पर लिखा है; केवल इसी देश में नहीं, परन्तु विदेशों में भी।

इसके सिवा उनकी हीरक जयन्ती के समय सन् १९५७ में उन्हें प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने जो अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट किया था उसमें भी गोविन्ददास जी के साहित्य की विस्तृत आलोचना है। गोविन्ददास जी के साहित्य पर हमें जहाँ तक पता लगा, निम्नलिखित पुस्तकें भी लिखी गई हैं :—

(१) सेठ गोविन्ददास के नाटक
लेखिका :—श्रीमती रत्नकुमारी देवी काव्यतीर्थ,

(२) कुलोनता प्रकाश :
लेखक :—डा० कृष्ण लाल हंस, सन् १९५१।

(३) कुलीनता प्रकाश :
लेखक :—श्री हरिशंकर परसाई, सन् १९५३।

(४) सेठ गोविन्ददास नाट्यकला तथा कृतियाँ :
लेखक :—डा० रामचरण महेंद्र, सन् १९५६।

(५) नाटककार सेठ गोविन्ददास :

लेखिका :—श्रीमती सावित्री देवी शुक्ल, एम० ए०, सन् १९५८।

(६) शशि गुप्त :

(७) सेठ गोविन्ददास साहित्य-समीक्षा :

लेखक :—डा० रामचरण महेन्द्र, सन् १९६३।

गुजरात के एक विश्वविद्यालय वल्लभ विद्यापीठ ने सेठ जी के साहित्य पर खोज (रिसर्च) का कार्य इन्दौर निवासी श्री केशरी नन्दन मिश्र एम० ए० को दिया था और हमें ज्ञात हुआ है कि उनके शोध-ग्रन्थ (थीसिस) पर इस विश्वविद्यालय ने उन्हें डाक्टरेट प्रदान कर दी है। यह शोध-ग्रन्थ लगभग एक हजार पृष्ठ का है। नागपुर विश्वविद्यालय में श्री दुर्गाशंकर मिश्र एम० ए० और कामरा विश्वविद्यालय में श्रीरामशंकरसिंह एम० ए० को गोविन्ददास जी के साहित्य पर खोज का विषय मिल गया है। और ये दोनों महानुभाव भी उनके साहित्य पर शोध ग्रन्थ (थीसिस) लिख रहे हैं।

परन्तु हमने इस संकलन में उनके साहित्यिक व्यक्तित्व और साहित्य पर ऐसे ही लेखों, पत्रों आदि का संकलन किया है, जो चाहे पत्र-पत्रिकादि में प्रकाशित हुआ हो, परन्तु किसी ग्रन्थ में प्रकाशित नहीं हुआ है। इनकी संख्या भी लगभग सवा सौ हो गई है। इस संकलन में जो पत्र प्रकाशित हुए हैं वे हमने उनके पास आये हुए सैकड़ों ही नहीं, हजारों पत्रों में से छांटे हैं। इस छंटाई में हमें सबसे अधिक परिश्रम करना पड़ा है।

प्रस्तुत संकलन में हमने उनके साहित्य के पक्ष की ही आलोचना का संग्रह नहीं किया है वरन् उनके साहित्य के विपक्ष में जो कुछ लिखा गया है उसे भी स्थान दिया है। फिर एक बात और ध्यान देने योग्य है कि उनके अनेक ग्रन्थ ऐसे हैं जिनके पक्ष में और विपक्ष में दोनों में ही मूर्धन्य आलोचकों की आलोचनाएँ हैं।

संकलन में संग्रहीत लेखों और पत्रों के शीर्षक हमने दिये हैं, परन्तु इस बात का पूरी तरह ध्यान रखा गया है, ये शीर्षक लेखों या पत्रों में व्यक्त विचारों के अनुरूप हों, इतना ही नहीं, शीर्षकों की भाषा तक ऐसी रखी गई है जो समीक्षकों ने अपने लेखों अथवा पत्रों में लिखी है।

संग्रह में हमने लेख और पत्र आदि का क्रम उनके लेखन की तिथि के अनुसार रखा है। जिनकी तिथि हमें प्राप्त नहीं हो सकी उन्हें हमने उस विषय के अन्त में स्थान दिया है। सन् १९३६ से अब तक सेठ जी के साहित्य पर कुछ-न-कुछ

लिखा जाता रहा है अतः इस संकलन का प्रथम लेख सन् १९३६ का तथा अंतिम लेख सन् १९६४ का है।

यद्यपि गोविन्ददास जी अब केवल हिन्दी भाषा के साहित्यिक क्षेत्र के ही नहीं, परन्तु भारत के साहित्यिक क्षेत्र के एक मूर्धन्य साहित्यकार माने जाते हैं तथापि हमें विश्वास है कि इस संकलन से उनके साहित्यिक व्यक्तित्व और साहित्य को और अधिक समझने में सहायता मिलेगी।

अक्षय तृतीया
विक्रमीय संवत् २०२२

विजयकुमार शुक्ल
गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव

विषय-सूची

व्यक्तित्व

सम्पादकीय १६
राष्ट्रभाषा के आराधक : राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त २४
बहुमुखी प्रतिभा के साहित्य सर्जक : राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद २५
हिन्दी साहित्य और राष्ट्रभाषा हिन्दी के सेवक : पं० जवाहर लाल नेहरू २५
असाधारण स्फूर्ति : भारतरत्न डा० भगवानदास २६
मध्य प्रदेश गौरव : २६
साहित्यिक राजनेता : श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार २७
आदर्शवादी निष्ठावान सिद्धहस्त नाटककार : डा० नगेन्द्र ३१
बलिदान की राह पर : श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' ३५

नाट्य-साहित्य

सम्पादकीय ३६
सामाजिक समस्याओं के सुलझे हुए विचारक : मुंशी प्रेमचन्द ४६
प्रचलित आन्दोलनों की धाराओं के दिग्दर्शक : प्रो० बेनी प्रसाद ४७
नाट्यकला के कुशल कलाकार : पं० रामनरेश त्रिपाठी ४७
प्रतिभा, मौलिकता और रोचकता के धनी : डॉ० बाबूराम सक्सेना ४८
हिन्दी नाट्य साहित्य के परिमार्जक : डॉ० सत्येन्द्र ५२
सुखान्त परिणति के लेखक : प्रो० शिलीमुख ५६
राम, कृष्ण और राधा के चरित्र-चित्रण का एक नया दृष्टिकोण : डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ६१
नाट्यकला एवं मनोभावों की प्रतिद्वन्दिता की सफल परिणति : श्री कालीदास कपूर ६३
उपदेशक नहीं कलाकार और यथार्थता के कलाकार : व्योहार राजेन्द्र सिंह ६८
गतिशील संवादों के सृष्टा : प्रो० सद्गुरुशरण अवस्थी ७४
एक नवीन नाटकीय संवाद : डॉ० प्रभाकर माचवे ७६

सामाजिक विषमताओं के व्यंग्यात्मक आलोचक :
डॉ० ब्रजमोहन गुप्त ८५
आत्मचिन्तन और लोकचिन्तन के आदर्शवादी साहित्यकार :
श्री शांतिप्रिय द्विवेदी ९१
आज की जीवित शक्ति : प्रो० प्रकाश चन्द्र गुप्त १०६
सब का सार : डा० भगवान दास १०९
प्रोपेगेण्डा भी होना चाहिए : डा० भगवान दास ११०
आपकी अपनी देन : श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ११२
अद्भुत प्रतिभा के धनी : डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ११३
नाट्यकला की मीमांसा में पूर्ण अधिकारी : साप्ताहिक-भारत ११३
नाट्यकलाओं की आलोचना में सर्वोपरि : नवभारत ११३
लेखक का प्रशंसनीय प्राध्यापक रूप : डॉ सत्यदेव चौधरी ११४
सांस्कृतिक धरोहर के रक्षक और सतत प्रहरी : श्री क्षेमचन्द्र सुमन ११६
हिन्दी के एक सर्वमान्य विद्वान : वेरियर इलविन १२०
भारत की सच्ची व्याख्या : भारत ज्योति १२२
भारत की झलक : सर्चलाइट १२२

उपन्यास

सम्पादकीय १२५
मानव जीवन का विश्वकोष : श्री शांतिप्रिय द्विवेदी १४९
कोई वाक्य ऐसा नहीं जो ज्ञान की सीमा में आगे न ले जाय :
पं० रामनरेश त्रिपाठी १५३
तत्कालीक सामाजिक प्रगति का सफल चित्रण :
महापंडित राहुल सांकृत्यायन १५४
तल स्पर्शिनी जीवन-दृष्टि : श्री कन्हैयालाल सहल १५४
भारत के संघर्षमय जीवन का सजीव चित्र : श्री ओंकार शरद १५५
योग्यता ही नहीं उत्कृष्ट प्रतिभा के प्रतीक : डॉ० भगवानदास १५८
अतिविस्तृत एवं प्रशस्त पृष्ठभूमि : आचार्य शिवपूजन सहाय १७०
नारीत्व की सजग प्रतिष्ठा : डॉ० उदयनारायण तिवारी १७०
साहित्य-माला में सुमेरु : डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल १७१
एक ऐतिहासिक दृष्टि : डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी १७१
आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का चित्रण : डॉ कमलाकान्त पाठक १७४

मार्के की वस्तु : डॉ० बल्देव प्रसाद मिश्र : १७६
सत्य का यथार्थ रूप कितना भयावह ! :
श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी १८१
भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास : डॉ० गुलाबराय १८६
सिर पर चढ़कर बोलनेवाला जादू : डॉ० देवराज उपाध्याय १६१
जीवन में प्रयोग दृष्टि : श्री उदयशंकर भट्ट १६५
हमारे सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन का प्रतिबिम्ब :
डॉ० स० राधाकृष्णन १६७
अर्द्धशती का भारतीय जीवन : डॉ० शिवनाथ १६७
राष्ट्रभाषा के रचनात्मक कार्यकर्ता : टाइम्स लिटरेरी सप्लीमेंट १६८
ठोस गुणों के लेखक : टाइम्स आफ इंडिया १६८

काव्य

संपादकीय २०१
समग्र साहित्य में कवित्व की झलक : श्री रामधारी सिंह दिनकर २०८
सुकवि मण्डली में सभादरणीय : डॉ० बल्देव प्रसाद मिश्र २११
भावपक्ष और कलापक्ष दोनों के सृष्टा : श्री कालिका प्रसाद दीक्षित
'कुसुमाकर' २२२

यात्रा-साहित्य

संपादकीय २३५
न्यूजीलैण्ड कान्फ्रेंस की एक झाँकी : श्री उमाशंकर शुक्ल २३६
यात्रा किए हुए देशों का विश्वकोष : श्री गणेश वासुदेव मावलंकर २४२
पर्यटक बाबू गोविंददास : श्री रामानुजलाल श्रीवास्तव २४५
तीक्ष्ण, गंभीर एवं मानवीय तथ्यों की पुस्तक :
श्री एस० एन० पाणिग्रही २५१
एक सुरुचिपूर्ण यात्रा-पुस्तक : हिन्दू, मद्रास २५२
पुस्तक का प्रत्येक शब्द दिलचस्प है : ए० डब्ल्यू० रोइबक २५२

आत्मकथा

संपादकीय २५५
चिरकालीन मित्रों की जीवन की जानकारी : डॉ० बाबूराम सक्सेना २५६
कलम के धनी : डॉ० बल्देव प्रसाद मिश्र २५६

ऐतिहासिक महत्व के ग्रन्थ : श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी २६१
साहित्य और वाङ्गमय की स्थायी कृति : डॉ० मोहनलाल शर्मा २६३
निरीक्षण की सूक्ष्म दृष्टि : श्री रामनरेश त्रिपाठी २६६
आदर्शों के प्रति असाधारण निष्ठा वाले का उज्ज्वल जीवन : काका साहेब कालेलकर २७१
राजनीति तथा साहित्य का एक अद्भुत सम्मिलन : श्री बनारसी दास चतुर्वेदी २७२
कृति व्रती का आत्म-चरित्र : श्री मैथिलीशरण गुप्त २७४
अनासक्त निर्लिप्त दृष्टि : डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी २७४
देश का इतिहास : डॉ० धीरेन्द्र वर्मा २७५
कर्म और ज्ञान का शुद्ध दर्पण : डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल २७५
दीर्घ साहित्यिक साधना का फल : डॉ० रामचरण महेन्द्र २७५
माखन बेचत हरि मिले एक पंथ दो काज : डॉ० देवराज उपाध्याय २७६
आत्मकथा साहित्य में एक अनुपम वृद्धि : श्री रामवृक्ष बेनीपुरी २७६
बहुमूल्य कृति : श्री महेन्द्र २७६
हिन्दी को राष्ट्रीय आन्दोलन बनाने वाले : श्री एल० एफ० रशब्रुक विलियास २७७
एक देशभक्त की जीवनी : टाइम्स आफ इंडिया २७८
कर्मनिष्ठ जन-सेवक की आत्मकथा : हिन्दी रिव्यू २७९

सेठ गोविन्ददास
व्यक्तित्व एवं साहित्य



डा० (सेठ) गोविन्ददास